मेहनतकशों का पैग़ाम
Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

नेट पर उपलब्ध :
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 R.N.I. No. 66400/97

स्कूल पक्के तौर पर बंद करने जा रही हरियाणा सरकार
दिल्ली पुलिस की अपनी स्टंटबाज़ी भी उतनी ही घातक है 3

तेजाब, कुल्हाड़ी, लैंगिक–बराबरी की भाषा
मोदी के खिलाफ़ भाजपा में गुटबंदी जोरों पर 4

नैतिक व सामाजिक मूल्य और भ्रष्टाचार
घरेलू हिंसा एक वैश्विक परिघटना (डब्यू. एच.ओ. रिपोर्ट) 6

जवाहर लाल के 600 करोड़ हजम....
एस एच ओ के त्वरित एक्शन से बड़ा कांड टला 8

वर्ष 26 अंक 19 फरीदाबाद, शुक्रवार, 16-31 अगस्त 2013 फोन : - 9999595632 सहयोग राशि 2 रुपया

15 अगस्त पर नागरिकों द्वारा सम्मानों की घोषणा

डॉक्टर इंजीनियर को भारत रत्न, अन्ना को पद्म विभूषण

खेमका, दुर्गाशक्ति, सरिता गुप्ता, वाणी गोपाल शर्मा, सतीश वर्मा, एस.पी. तमंग को पद्म श्री

दिल्ली, मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

शासकों द्वारा अपने मतलब के लोगों को नागरिक सम्मानों से नवाजने की परम्परा में दखल देते हुए इस बार स्वतंत्रता दिवस पर 'मज़दूर मोर्चा' ने आम नागरिकों के सहयोग से पद्म सम्मानों को सही हकदारों तक ले जाने की मुहिम चलाई है। 'मोर्चा' द्वारा किये गये सर्वे के आधार पर उपरोक्त हस्तियों को इन सम्मानों के लिये उपयुक्त पाया गया है।

डॉक्टर असगर अली इंजीनियर का भारतीय राष्ट्र के बहुलतावादी एवं सहिष्णु चरित्र को मजबूत करने में अप्रतिम योगदान रहा है। इस वर्ष 74 वर्ष की उम्र में महीनों जानलेबा बीमारी से लड़ने के बाद मुंबई में उनका निधन हुआ। एक पेशेवर इंजीनियर के रूप में अपना कैरियर शुरू करने वाले असगर अली को अपने मतावलंबी दाउदी बोहरा सम्प्रदाय के सामंती कठमुल्लापन के मुकाबले में उतरना पड़ा। जल्द ही उन्होंने नौकरी छोड़ दी और अपने उदारवादी तर्कों से धार्मिक बहसों में नये आयाम जोड़ने शुरू किये। मुसलमानों के लिये पवित्र कुरान को उन्होंने कठमुल्लों की प्रतिगामी एवं समाज को बांटने वाली व्याख्याओं से मुक्त कराने का बीड़ा उठाया। विशेषकर मुस्लिम स्त्रियों को डाक्टर इंजीनियर के प्रयासों से नई

'मज़दूर मोर्चा' परिवार उपरोक्त सभी सम्मानित व्यक्तियों को समाज का असली हीरो मानते हुए उन्हें जनता की ओर से बधाई देता है। भारतीय समाज को उनके योगदान पर गर्व है।

पहचान और नई उर्जा मिली। देश में ही नहीं बल्कि दुनिया के तमाम देशों में डॉक्टर इंजीनियर ने भारत के बहुलतावादी मॉडल का प्रतिनिधित्व किया। वे सही अर्थों में भारतीय जनता की शांति एवं सद्भाव की परम्परा का प्रतिनिधित्व करते थे। अन्ना हजारे को भारतीय जनता काफ़ी हद तक गांधी जी के एक सच्चे अनुयायी के रूप में देखती है। उन्होंने भ्रष्टाचार को जनता के प्रमुखतम शत्रु के रूप में स्थापित किया है। महाराष्ट्र के रालेगांसिद्धि में किये गये सामाजिक प्रयोगों से अन्ना ने उसी तरह की अनुभवशीलता को भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन का हथियार बनाया जैसे गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका के अनुभवों को भारतीय स्वराज के लिये बनाया था। आज यदि देशवासियों से पूछा जाय कि सार्वजनिक जीवन में सक्रिय किस एक व्यक्ति पर उन्हें सर्वाधिक भरोसा है, तो निश्चय ही अन्ना हजारे का नाम ही सबसे ऊपर होगा।

जीवन के आठवें दशक में एक राष्ट्रव्यापी आन्दोलन को जन्म देना अन्ना को एक ऐसे समाजसेवी के रूप में प्रतिष्ठित करता है जो वर्षों / दशकों तक इस देश के आम नागरिक को संघर्ष की प्रेरणा देता रहेगा। आज के भारतीय परिदृष्य में तमाम सत्तावर्गों के भ्रष्टाचार के प्लेटफ़ार्म पर एकजुट होने के बावजूद यदि ईमानदारी एवं सचाई के मूल्य फ़िर भी बहस के केन्द्र में बने रहते हैं तो इसका काफ़ी हद तक श्रेय अन्ना के नेतृत्व में चलाये गये लोकपाल आन्दोलन को जाता है।

अशोक खेमका, दुर्गाशक्ति नागपाल, सतीश वर्मा और एस.पी.तमंग जैसे लोकसेवकों पर किसी भी तन्त्र को गर्व होना चाहिये। इन सभी में एक विशिष्ट समानता यह है कि ये न केवल सच को जानते हैं बल्कि सच के पक्ष में तमाम जोखिमों के बावजूद उतरने को तैयार हैं।

शेष पेज 2 पर

शासकों का जश्न-ए-आज़ादी, आम जनता की बरबादी

फ़रीदाबाद (म.मो.) अपने दुष्कर्मों की वजह से भारतीय शासक वर्ग इस कदर खौफ़ज़दा है कि उसने 11 अगस्त से ही माल ढोने वाले तमाम भारी वाहनों का दिल्ली प्रवेश रोक दिया है। नई दिल्ली के तमाम सरकारी व गैर सरकारी दफ़्तरों को आधा-आधा दिन के लिये बंद करा दिया है। मेट्रो रेल के अनेकों स्टेशन बंद करा दिये हैं। रेल सेवाओं को भी बाधित कर दिया है। बसों के रास्तों को बदल दिया गया है। दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में लगने वाले साप्ताहिक बाज़ार सप्ताह भर के लिये बन्द करा दिये गये हैं।

आम आदमी इसे अपना त्योहार मान भी कैसे सकता है? उसे मिला ही क्या है? उसके हिस्से तो आई है केवल भूख, बेरोज़गारी, बिमारी व जहालत। आज़ादी के नाम पर केवल उसकी गुलामी का स्वरुप बदला है। आज़ादी तो केवल उस राजनीतिक गिरोह को मिली है जो सत्ता के बलबूते पूरे देश को लूटने व आम जनता को प्रताड़ित करने में जुटा है। इसी से प्रफुल्लित यह गिरोह इस जश्न के द्वारा अपनी खुशी एवं सत्ता के दम्भ का प्रदर्शन करता है।

इसके परिणामस्वरूप रोज़ कमा कर रोज़ खाने वाले आम आदमी की मुसीबतें बढना स्वाभाविक है। दफ़्तरों के बंद होने से काम काज ठप हो जाता है। व्यवस्था में ठहराव आ जाता है। आवागमन के सार्वजनिक साधनों को बाधित करने से जनसाधारण का कितना समय व धन बर्बाद होता है, समझा जा सकता है।

फ़रीदाबाद की ओर से दिल्ली में प्रवेश करने वाले माल-वाहकों को झाड़सेंतली के पास ही रोक दिया गया है। ये वाहन दिल्ली प्रवेश के लिये या तो 'जश्न-ए-आज़ादी' मन जाने तक का इन्तज़ार करें या इधर-उधर से घूम कर लम्बे रास्तों द्वारा दिल्ली के पार जायें। और जिन्हें माल ले जाना ही दिल्ली में है, उन्हें तो 4 दिन इस तरह खड़े रहने की सज़ा भुगतनी ही भुगतनी है। इस सारी कवायद से जो आर्थिक हानि होगी उसका सारा बोझ भी उसी आम आदमी को ढोना है जिसका इस तथाकथित राष्ट्रीय जश्न से कोई ताल्लुक नहीं।

यह सारी कवायद उस शासक वर्ग की सुरक्षा के नाम पर की जा रही है जिसने अपने कुकृत्यों एवं घोटालों से पूरे देश को अस्थिर एवं असुरक्षित बना डाला है। 66 वर्ष पूर्व अंग्रेजों द्वारा इस शासक वर्ग को हस्तान्तरित की गयी सत्ता का यदि इसने दुरूपयोग न किया होता, इस देश की संपदा को लूटा न होता तो आज ये दिन न देखने पड़ते। तमाम आतंकवाद, अपराध व अराजकता इसी शासक वर्ग की जनविरोधी नीतियों की देन है। आर्थिक विषमताओं और राजनीतिक संरक्षण में ही इनकी उत्पत्ति होती है। गत 66 वर्षों में देश के राजनेताओं ने केवल यही कुछ किया है।

अपने इस जश्न को शासक वर्ग लाख राष्ट्रीय त्योहार की संज्ञा दे लें, लेकिन राष्ट्र की आम जनता का इससे कोई लेना-देना नहीं है। देश भर में सरकारों द्वारा प्रायोजित इस जश्न में देश की फुल आबादी का एक प्रतिशत भाग भी शामिल नहीं हो पाता। आधी से अधिक जनता को तो, अनपढता की वजह से, पता ही नहीं कि यह सारा ड्रामा है क्या? इस ड्रामे को समझने की अपेक्षा वह रोज़ी-रोटी के उपायों को समझना ज़्यादा जरूरी समझता है।

शेष पेज 2 पर

ख़बर दार

एस डी एम दुर्गा शक्ति नागपाल का निलम्बन

मुलायम का दीवालियापन कम, चुनावी बौखलाहट ज़्यादा

प्रदेश के 'दुर्गा शक्ति नागपाल प्रकरण' के पीछे मुलायम-अखिलेश सरकार का दिमाग़ी दिवालियापन कम है, और चुनावी बौखलाहट का समीकरण ज़्यादा हावी है। एसडीएम गौतम बुद्ध नगर सदर को नौकरी से निलम्बित करके बाप-बेटे की दोतरफ़ा मंशा अपने समथर्कों को आश्वस्त करने की है और साथ ही वे मुस्लिम वोटों के अपने पक्ष में ध्रुवीकरण पर भी निगाह बनाये हुए हैं।

दुर्गा के निलम्बन का सीधा सम्बन्ध रेत-माफ़िया को खुश रखने से है। पर यदि केवल इस माफ़िया को ही सन्तुष्ट करना होता तो युवा आईएएस अधिकारी

दरअसल मुस्लिम मतदाताओं का ध्रुवीकरण, मोदी के डर से, कांग्रेस के पक्ष में होता जा रहा है। वे जानते हैं कि मुलायम की पार्टी को लोकसभा चुनावों में मत देना हर तरह से भाजपा और नरेन्द्र मोदी के फ़ायदे में जायेगा। अखिल भारतीय स्तर पर कांग्रेस ही भाजपा और मोदी की काट बन सकती है। लिहाजा, मुलायम को आज ऐसे मुद्दे खड़े करने का फ़ायदा है जिनसे वे मुसलमानों के सबसे बड़े पैरोकार नज़र आयें।

का तबादला करके भी निकाला जा सकता था। बिना वजह जनमत,

दुर्गा के बहाने निशाने पर यादव-मुस्लिम वोट

मीडिया, शक्शिाली आईएएस लॉबी को अपने पीछे लगाने की जहमत क्यों उठानी थी? समाजवादी पार्टी के क्षेत्रप्रमुख नरेन्द्र सिंह भाटी के दावे में सच्चाई है कि उसकी शिकायत पर ही मुलायम और अखिलेश ने एसडीएम दुर्गा को सबक सिखाया है। भाटी के रेत-माफ़िया से सम्बन्ध जगजाहिर हैं और ऐसे में दुर्गा नागपाल द्वारा उनकी लूट को रोकने पर भाटी का सक्रिय होना स्वाभाविक हो जाता है। अगर देखा जाय तो मुलायम सिंह (अखिलेश में अभी इतनी अक्ल नहीं) ने एक तीर से दो शिकार किये हैं। आगामी लोकसभा चुनावों को लेकर मुलायम की चिंता अपने विधानसभाई वोट-बैंक बनाए रखने को लेकर है, जिस दिन में मुख्यत: यादव एवं मुस्लिम मतदाता शामिल हैं।

शेष पेज 2 पर